OM-11- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 08/08/2021 12:56 PM Page 5

एक नायक से सिद्धि विनायक की ओर

सबके घर की स्थिति, परिस्थिति किसी भी त्योहार या किसी भी देवी देवता के आधार से है या वास्तु-विज्ञान के आधार से है या ज्योतिष-कर्मकाण्ड के आधार से है? एक छोटा बच्चा जब जन्म लेता है, जिस माता-पिता के पास आता है, उस घर की जो भी मनोस्थिति हो, मनोदशा हो, परिस्थिति हो, चार-पाँच साल तक तो उसका उसे कुछ एहसास ही नहीं होता, क्योंकि उसके माता-पिता उसको हर चीज़ उसके हिसाब से उपलब्ध कराते हैं। लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं, परिस्थितियां हमारे ऊपर हावी होती हैं, तो हम सभी उन बातों से अपने आपको जोड़ते हैं, जो हमारी स्थिति को बिगाड़ रही हैं। ऐसा सबको लगता है। उसके बाद सभी लोग सहारे लेना शुरु करते हैं वास्तु, ज्योतिष और उसके साथ जुड़ी हुई चीज़ों का। और समय-समय पर जो त्योहार आते हैं, जो जहाँ जिसको मानता है, उसके साथ जुड़ना शुरु करता है। तो संसार एक चाल से चलना शुरु कर देता है कि आप इनकी पूजा करो, इनका व्रत रखो तो मनोकामनायें पूरी हो जायें। अब यहाँ एक बात आती है कि जो जिस देवता का व्रत रख रहा है, वो उसके एक गुण को लेकर रख रहा है जैसे शीतला देवी के व्रत से यह फायदा है, दुर्गा जी के व्रत से यह फायदा है, गणेश जी के व्रत से यह फायदा है।

सभी कहते हैं, गणेश की पूजा करने से सारे विघ्न नष्ट हो जाते हैं। अब गणेश की पूजा से विघ्न नष्ट हो रहे हैं, यह बात कुछ अजीब-सी लगती है, क्योंकि गणेश जी तो एक मूर्ति है, और मूर्ति में आपकी श्रद्धा है। श्रद्धा और भावना तो हम क्रियेट कर रहे हैं कि इनकी पूजा करने से हमारे विघ्न नष्ट हो जायेंगे। तो संकल्प भी हम कर रहे हैं, भावना भी हम ही रख रहे हैं, सोच भी हम ही रहे हैं। तो आप देखो, सिद्धि कहाँ से आ रही है? ये विघ्न या निर्विघ्न स्थिति कहाँ से बन रही है? हमारे संकल्पों से बन रही है। तो मनुष्य की आज की स्थिति असमंजस वाली है। शायद इसीलिए गणेश जी की धड़ और गणेश जी का सर मनुष्य और जानवर के साथ जोड़ दिया गया है। मतलब स्थिति-परिस्थिति बदलने का जो भाव है मनुष्यों का, वो इस तरह से दर्शाया गया है। इसीलिए आप बड़े ध्यान से जब इनका चित्र देखेंगे तो इन चित्रों के जो भाव हैं एक-एक, इन भावों के साथ भी निर्विघ्न स्थिति को दर्शाया जाता है और दुनिया का सबसे बुद्धिमान जानवर हाथी को माना जाता है जो एक साधारण इंसान के साथ रहता है। लेकिन उस हाथी जैसी स्थिति में अगर... कहा जाता है कि एक छोटी-सी चींटी जैसा भी कोई उल्टा-पुल्टा संकल्प चल जाये तो व्यक्ति को मौत के घाट सुला देता है। इसलिए हम सभी जितने भी अच्छी तरह से व्रत और उपवास करने वाले लोग हैं, उन्हें ये सोच लेना चाहिए, समझ लेना चाहिए, जान लेना चाहिए कि हमारे संकल्पों के आधार से विघ्न आते हैं और हम अच्छे संकल्पों से निर्विघ्न बनते हैं। तो अगर मुझे सिद्धि विनायक की स्थिति बनानी है, सिद्धि स्वरूप बनना है तो एक छोटा-सा गलत संकल्प भी हमें धराशायी कर सकता है। इसलिए जितने अच्छे-अच्छे संकल्प, जितनी अच्छी-अच्छी हमारी सोच, जितनी देर हमारा अच्छा सोचने का कार्य होता है, उतने दिन तक, उतने समय तक हमारे घर की हमारी स्थिति और परिस्थिति निर्विघ्न बनी रहती है। कोई एक महीना, दो महीना या दस दिन पूजा करने वाली बात नहीं है, आप दस दिन पूजा करते हुए अच्छे संकल्प चलायेंगे, लेकिन उसके बाद फिर वैसा ही सोचने लग जायेंगे। इसलिए संकल्पों का जो उतार-चढ़ाव है, वो ही हमारे आस-पास विघ्न पैदा करता है। तो हर एक नायक सिद्धि विनायक है। और वो सिद्धि आपने प्राप्त की हुई है, बस थोड़ा-सा अपने आप को समझाओ, बार-बार अच्छा सोचने का संकल्प करो ताकि सब अच्छा हो जाये।

दिल की बात

शिवबाबा की समझानी को हम अंदर तक धारण करें कि अगर कोई भी बात आती है, तो मुझे अंदर जाना, अपने भीतर देखना है। मुझे परिस्थिति नहीं देखनी, अपनी पॉवर को देखना है कि मैं क्यों हिल रहा हूँ? और जितना गहराई तक हम अपने अंदर इस बात को समा लेते हैं, उतना ही हम समझ पाते हैं कि अगर कुछ भी बात आने पर मैं मन से हिलता हूँ, विचलित होता हूँ, तो इसका मतलब मैं ही कमज़ोर हूँ, और मुझे खुद को ही ठीक करना है, मुझे बाहर नहीं देखना ठीक होने के लिए, दूसरे की तरफ ध्यान ही नहीं देना। तो जितनी ये बात मेरे अंदर तक पक्की हो जायेगी, उतना ही मैं पॉवरफुल बनता जाऊंगा।

अमृत का काम होता है, शुद्ध करना। ज्ञान भी अमृत ही है जो कि आत्मा को पावन बनाता है, अगर वह दिल में समा जाए तो ज्ञान मन की मैल को धो, आत्मा को शुद्ध बनाता है।

अगर किसी का कल्याण चाहते हो, तो सबसे पहले अपना कल्याण कर लो। क्योंकि स्वयं के कल्याण में ही सबका कल्याण समाया हुआ है। पर होता क्या है! हम खुद समझें-न-समझें, परंतु दूसरों को समझानी देने में हमें बहुत मज़ा आता है। क्योंकि ज्ञान सुनाना हमें सहज लगता है, और स्वयं का परिवर्तन करना मुश्किल। इसलिए हम सहज रास्ता पकड़ लेते हैं और स्व को परिवर्तन कर नहीं पाते।

ये संकल्प ही गलत है कि मैं किसी का कल्याण कर रहा हूँ। हम जो कुछ भी करते हैं, वह स्वयं के लिये ही करते हैं। क्योंकि कर्म से भाग्य बनता है। और अगर हमारे संकल्प में ही ये आ गया कि मैं किसी का कर रहा हूँ, तो वहीं पर हमारा भाग्य रुक जाता है। क्योंकि तब हममें स्वार्थ भाव आ गया कि मैं कर रहा हूँ। ये संकल्प ही निगेटिव है।

जशनपुर-उ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बल्लापुर कैम्पस में आयोजित पौधारोपण कार्यक्रम में शरीक हुए कलेक्टर महादेव कावड़े, सी.एस.एच.ओ. डॉ. पी. सुधार, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरिता बहन, रायगढ़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. चित्रा बहन, ब्र.कु. राधिका, ब्र.कु. बेबी तथा अन्य।

रतलाम-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के राजीव गांधी सिविक सेंटर सेवाकेन्द्र पर माणक चौक थाने के टी.आई. दिलीप राजोरिया को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मनोरमा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. पूजा, ब्र.कु. आरती, टी.आई. साहब की बहन रेखा चौबे तथा जीजा राजाराम चौबे।

विचारों पर नियंत्रण ही हमारे चरित्र को स्वरूप देता है

कई शोध अध्ययनों का निष्कर्ष है कि विचार ही पावर है। विचार ही जीवन का अंग बनकर चरित्र को विशेष स्वरूप प्रदान करते हैं और चरित्र ही हमारी आदतों पर, इच्छाशक्ति पर नियंत्रण रखता है। चरित्र के मुताबिक ही हमारे काम होते हैं। विचारों में डर, शंका या फिर विश्वास, जो भी मौजूद होगा। हमारा चरित्र भी उसी प्रकार से आकार लेना शुरू कर देगा। अमेरिकन प्रोफेसर डॉ. बारबरा फ्रेड्रिक्सन ने सालों तक सकारात्मकता पर शोध किया। वह लिखती हैं कि विचारों पर नियंत्रण न हो या उनका प्रवाह नकारात्मकता की ओर हो, तो एक समय के बाद इसके दुष्प्रभाव न सिर्फ आपके जीवन, कामकाज बल्कि स्वास्थ्य में भी नज़र आने लगते हैं।

मशहूर लेखक विद्वान स्टेट मॉड्रेन कहा करते थे आशा और निराशा के दो रूप हैं। और इनमें से एक तीसरा रूप निकलता है, वह है अभिलाषा का। आशा और अभिलाषा किसी वस्तु को, आकृति को गीली मिट्टी में तैयार करके उसे सांचे में ढाल देती है। और कर्म जीवन में उसे सफेद पत्थर जैसा साकार, पक्का बनाकर प्रकट कर देता है। हमारा विश्वास वह उम्मीद और आशा है। दुनिया में ऐसी कोई खुशी नहीं जिसके लिए आपकी आत्मा बेचैन हो और वह आपको न मिले। लेकिन मनचाही खुशी तभी मिलेगी, जब आप खुद को उसके लिए योग्य बनाएंगे। इसलिए अपने विचारों पर नियंत्रण रखना ज़रूरी है। अविश्वास हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है। कोरी कल्पना से कुछ नहीं

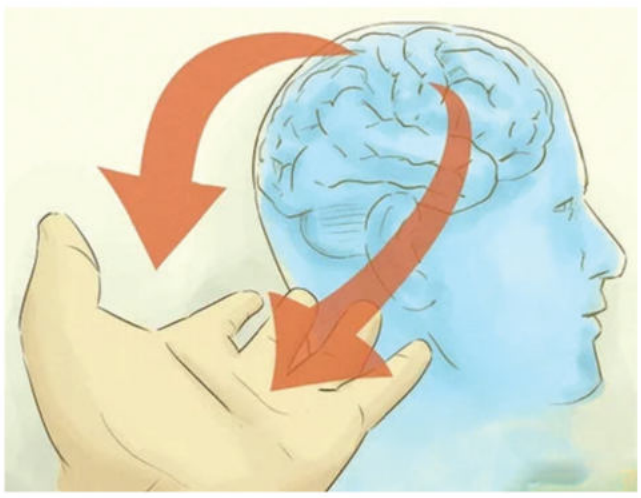

होने वाला। कल्पना, आशा, विश्वास और परिश्रम मिलकर ही सफलता का दरवाजा खोलते हैं।